पाठ 17

1. क्या हुआ जब शेत के वंश के पुत्रों ने कैन के वंश की पुत्रियों से ब्याह करना आरम्भ किया?

-अधिक से अधिक लोग परमेश्वर की बात नहीं सुनना चाहते थे।

-अधिक से अधिक लोगों ने केवल शैतान की बात सुनी।

2. परमेश्वर ने कहा कि वह केवल 120 वर्षों के लिए लोगों से बात करेगा, और यदि वे फिर भी परमेश्वर का अनुसरण करने से इनकार करते हैं, तो परमेश्वर क्या करेगा?

-परमेश्वर उन्हें मौत की सजा देंगे।

3. परमेश्वर लोगों से कैसे बात कर रहा था?

-परमेश्वर पवित्र आत्मा लोगों से उनके मन में बात कर रहा था।

4. पवित्र आत्मा परमेश्वर लोगों से क्या कह रहा था?

-परमेश्वर की सुनें न कि शैतान की।

-परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करें न कि अपने तरीके से।

5. नूह के समय के लोग कैसे थे?

-वे स्वार्थी और लालची थे।

-वे दुष्ट और हिंसक थे।

-उन्हें परमेश्वर का रास्ता नहीं चाहिए था।

-वे केवल अपना रास्ता चाहते थे।

6. क्या परमेश्वर ने लोगों के पापों को देखा?

-हाँ, परमेश्वर ने उनके सभी पापों को देखा।

7. क्योंकि पृथ्वी लोगों के पापों से भरी हुई थी, परमेश्वर ने क्या करने का निर्णय लिया?

-पृथ्वी पर सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करने के लिए।

8. परमेश्वर ने नूह को बचाने का फैसला क्यों किया?

-नूह जानता था कि वह पाप में पैदा हुआ है।

-नूह जानता था कि उसने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है।

-नूह जानता था कि परमेश्वर सभी पापों को मौत की सजा देता है।

-नूह जानता था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचा सकता है।

-नूह जानता था कि परमेश्वर उद्धारकर्ता को उसके पापों से बचाने के लिए भेजेगा।

9. परमेश्वर ने नूह को क्या करने की आज्ञा दी?

-नाव बनाने के लिए।

10. क्या परमेश्वर चाहता था कि नूह नूह के मार्ग के अनुसार नाव बनाए?

-नहीं।

11. परमेश्वर कैसे चाहता था कि नूह नाव का निर्माण करे?

- ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर ने आज्ञा दी थी।

12. परमेश्वर ने नूह को कितनी नावें बनाने की आज्ञा दी थी?

-केवल एक।

13. परमेश्वर ने नूह को नाव में कितने द्वार बनाने की आज्ञा दी?

-केवल एक।

14. हालाँकि पृथ्वी पर किसी ने पहले कभी बारिश नहीं देखी थी, नूह ने क्या विश्वास किया?

- कि परमेश्वर एक बाढ़ भेजेगा।

15. नाव बनाते समय नूह ने क्या किया?

-नूह लोगों को परमेश्वर की बात सुनने और उस पर विश्वास करने के लिए कह रहा था।

-परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह उन सभी लोगों को नष्ट करने के लिए एक बाढ़ भेजने जा रहा है जो परमेश्वर में विश्वास नहीं करते हैं।

-क्या परमेश्वर वह करना भूल जाता है जो वह कहता है कि वह करेगा?

-नहीं।

-क्या ईश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा?

-हां।

-यहाँ एक दृष्टांत है:

-एक दिन, आपका बच्चा आपका बर्तन तोड़ देता है।

-आप अपने बच्चे से बहुत नाराज हो जाते हैं।

-आप अपने बच्चे को बताएं कि आप उसे बाद में सजा देंगे।

-बाद में आप अपने बच्चे को सजा देना भूल जाते हैं।

-बाद में आप यह भी भूल जाते हैं कि आपके बच्चे ने आपका बर्तन तोड़ा है।

-लेकिन परमेश्वर लोगों की तरह नहीं है।

-लोग भूल जाते हैं, लेकिन परमेश्वर नहीं भूलते.

-परमेश्वर ने आदम से कहा कि अगर वह फल खाएगा तो वह मर जाएगा।

-क्या आदम की मृत्यु उस समय हुई जब उसने फल खाया?

-हां।

-क्या परमेश्वर भूल गया कि उसने आदम से क्या कहा?

-नहीं।

-क्या परमेश्वर ने वह किया जो उसने कहा कि वह करेगा?

-हां।

-परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर भेजा।

-परमेश्वर लोगों की तरह नहीं है।

-परमेश्वर वह करना कभी नहीं भूलता जो वह कहता है कि वह करेगा।

-परमेश्वर हमेशा वही करेगा जो वह कहता है कि वह करेगा।

-परमेश्वर पाप के बारे में नहीं भूलते।

-परमेश्वर पाप की सजा देना नहीं भूलते।

-परमेश्वर हर पाप की सजा देते हैं।

-परमेश्वर हर पाप को मौत की सजा देते हैं।

-परमेश्वर ने लोगों के उस पर विश्वास करने की प्रतीक्षा की।

-परमेश्वर ने नूह के समय में लोगों पर विश्वास करने के लिए कितने समय तक प्रतीक्षा की?

-120 साल।

-जबकि परमेश्वर ने लोगों के उस पर विश्वास करने की प्रतीक्षा की, क्या उनके पाप के साथ उनका क्रोध कम हुआ?

-नहीं।

-जबकि परमेश्वर ने लोगों के उस पर विश्वास करने की प्रतीक्षा की, उनके पापों के साथ उनका क्रोध केवल बढ़ गया।

-पाप से ही परमेश्वर का क्रोध बढ़ता है।

-पाप से परमेश्वर का क्रोध तभी तक बढ़ता है जब तक परमेश्वर को पाप का दंड देने का समय नहीं आता।

-नूह द्वारा नाव का निर्माण समाप्त करने के बाद परमेश्वर ने नूह से क्या कहा?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 7:1-4

1 तब यहोवा ने नूह से कहा, हे अपके सारे परिवार समेत सन्दूक में जा, क्योंकि मैं ने तुझे इस पीढ़ी में धर्मी पाया है।

2- सब प्रकार के शुद्ध पशुओं में से सात को, एक नर और उसका साथी, और सब प्रकार के अशुद्ध पशुओं में से दो, एक नर और उसका साथी ले जाना,

3 और सब प्रकार के सात पक्षी, चाहे नर हो या मादा, कि सब प्रकार के पक्षी सारी पृथ्वी पर जीवित रहें।

4 अब से सात दिन बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात तक पृथ्वी पर मेंह बरसाऊंगा, और जितने प्राणी मैं ने बनाए हैं उन सभोंको पृथ्वी पर से पोंछ डालूंगा।"

-जब नूह ने नाव का निर्माण पूरा कर लिया, तो परमेश्वर ने नूह से क्या करने को कहा?

-परमेश्वर ने नूह को अपने परिवार को ले जाने और नाव में प्रवेश करने के लिए कहा।

-परमेश्वर ने नूह को जानवरों को नाव में ले जाने के लिए भी कहा।

-परमेश्वर के लिए लोगों को नष्ट करने का समय आ गया था।

-परमेश्वर लोगों को क्यों नष्ट करने जा रहे थे?

-लोगों को विश्वास नहीं हुआ कि वे पापी हैं।

-लोगों को विश्वास नहीं था कि उनका पाप अनन्त मृत्यु के योग्य है।

-लोगों को विश्वास नहीं था कि केवल परमेश्वर ही उन्हें बचाएंगे।

-लोगों ने उद्धारकर्ता को भेजने के परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं किया।

-परमेश्वर ने 120 साल इंतजार किया कि लोग परमेश्वर के रास्ते पर चलने के लिए अपने रास्ते से मुड़ें।

-लेकिन लोग केवल अपना रास्ता चाहते थे।

-परमेश्वर ने 120 साल तक इंतजार किया।

-परमेश्वर अब और इंतजार नहीं करेंगे।

-यह परमेश्वर के लिए लोगों को दंडित करने का समय था।

-आज भी परमेश्वर वही हैं।

-परमेश्वर इंतजार कर रहे हैं कि लोग परमेश्वर के रास्ते पर चलने के लिए अपने रास्ते से मुड़ें।

-एक दिन, परमेश्वर अब और इंतजार नहीं करेंगे।

-एक दिन, परमेश्वर सभी लोगों को दंडित करेगा।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 7:7-11

7 और नूह और उसके पुत्र और उसकी पत्नी और उसके पुत्रोंकी पत्नियां जलप्रलय के जल से बचने के लिथे सन्दूक में गए।

8 शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के जोड़े, पक्षियों और भूमि पर रेंगने वाले सभी प्राणियों के जोड़े,

9 नर और नारी, नूह के पास आए और जहाज में प्रवेश किया, जैसा कि परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दी थी।

10 और सात दिनों के बाद जलप्रलय का जल पृथ्वी पर आ गया।

11-नूह के जीवन के छः सौवें वर्ष के दूसरे महीने के सत्रहवें दिन को उस दिन बड़े गहिरे जल के सब सोते फूट पड़े, और आकाश के झरोखे खुल गए।

-नूह और उसका परिवार नाव में कैसे घुसे?

-अकेले दरवाजे से।

-सभी जानवर नाव में कैसे घुसे?

-अकेले दरवाजे से।

-यही एकमात्र द्वार था जिसे बचाया जा सकता था।

-परमेश्वर की सजा से बचने का यही एकमात्र द्वार था।

-क्या परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह अच्छा था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह का मानना था कि उसने पाप किया है।

-परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह का मानना था कि उसका पाप योग्य है

शाश्वत मृत्यु।

-परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह को विश्वास था कि केवल परमेश्वर ही उसे बचाएगा।

-परमेश्वर ने नूह को बचाया क्योंकि नूह ने उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर के वादे पर विश्वास किया था।

-नूह और उसके परिवार और सभी जानवरों के नाव में घुसने के बाद क्या हुआ?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 7:16ख

16-तब यहोवा ने नूह को भीतर बन्द कर दिया।

-नूह और उसके परिवार और सभी जानवरों के नाव में घुसने के बाद, परमेश्वर ने क्या किया?

-परमेश्वर ने दरवाजा बंद कर दिया।

-परमेश्वर ने दरवाजा क्यों बंद किया?

-ताकि अंदर के लोग सुरक्षित रहें।

-ताकि बाहर वालों की मौत हो जाए।

-अगर बाहर के लोग रोते, तो क्या नूह दरवाजा खोल पाता?

-नहीं।

-क्यों?

-क्योंकि परमेश्वर ने दरवाजा बंद कर दिया।

-जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की वाटिका से बाहर भेजा, तो क्या वे वापस अंदर जाने में सक्षम थे?

-नहीं।

-क्यों?

-क्योंकि परमेश्वर ने द्वार पर एक स्वर्गदूत और एक जलती हुई तलवार रखकर उन्हें बगीचे से बाहर कर दिया।

-क्या कोई परमेश्वर की सजा से बच सकता है?

-नहीं।

-जब परमेश्वर लोगों को दंडित करने का फैसला करता है, तो कोई भी नहीं बच सकता।

-परमेश्वर ने नाव का दरवाजा बंद करने के बाद बारिश भेजी।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 7:17-20

17- चालीस दिन तक जल-प्रलय पृथ्वी पर आता रहा, और जैसे-जैसे जल बढ़ता गया, उन्होंने सन्दूक को पृथ्वी के ऊपर ऊंचा किया।

18- जल पृथ्वी पर बहुत बढ़ गया, और सन्दूक जल के ऊपर तैरने लगा।

19 वे पृथ्वी पर बहुत ऊंचे उठे, और सारे आकाश के नीचे के सब ऊंचे पहाड़ ढंप गए।

20-पानी बढ़ गया और पहाड़ों को बीस फीट से अधिक की गहराई तक ढक दिया।

-परमेश्वर ने कैसे पूरी पृथ्वी को बाढ़ से ढक दिया?

-शुरुआत में परमेश्वर ने पानी अलग किया।

-परमेश्वर ने कुछ पानी पृथ्वी पर छोड़ा, और कुछ पानी आकाश के ऊपर रखा।

-जलप्रलय को पूरी पृथ्वी को ढकने के लिए, परमेश्वर ने आकाश के ऊपर रखे सभी जल को बरसाने का कारण बना दिया।

-क्या लोगों ने पहले कभी बारिश देखी है?

-नहीं।

-भले ही लोगों ने पहले कभी बारिश नहीं देखी थी, लेकिन परमेश्वर ने 40 दिनों तक बारिश कराई।

-सारी पृथ्वी जल से आच्छादित हो गई।

-ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और ऊँचे-ऊँचे पेड़ भी पानी से आच्छादित थे।

-परमेश्वर सब कुछ कर सकते हैं।

-परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

-केवल परमेश्वर ही सर्व शक्तिशाली हैं।

-उन सभी का क्या हुआ जो नाव के बाहर थे?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 7:21-23

21-पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जीव-जन्तु-पक्षी, पशु, वनपशु, वे सब जन्तु, जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, और सब मनुष्य जाति के सब प्राणी नाश हो गए।

22- सूखी भूमि पर सब कुछ जिसके नथनों में जीवन का श्वास था, मर गया।

23-पृथ्वी पर के सब जीवित जन्तु नाश हो गए; मनुष्य, क्या पशु, क्या भूमि पर रेंगनेवाले जन्तु, और आकाश के पक्षी पृथ्वी पर से मिटा दिए गए। केवल नूह बचा था, और जो उसके साथ जहाज में थे।

-नाव के बाहर के सभी जानवरों का क्या हुआ?

-वे सभी मर गए।

-नाव के बाहर के सभी लोगों का क्या हुआ?

-वे सभी मर गए।

-ज्यादातर लोग आज नहीं मानते कि वे पापी हैं।

-ज्यादातर लोग आज यह नहीं मानते कि उनका पाप अनन्त मृत्यु के योग्य है।

-ज्यादातर लोग आज यह नहीं मानते कि सिर्फ परमेश्वर ही उन्हें बचा सकते हैं।

-अधिकांश लोग आज उद्धारकर्ता को भेजने के लिए परमेश्वर के वादे पर विश्वास नहीं करते हैं।

-ज्यादातर लोग आज शैतान की सुनते हैं न कि परमेश्वर की।

-ज्यादातर लोग आज अपने पाप से प्यार करते हैं।

-क्या आप ज्यादातर लोगों की तरह हैं, या आप नूह की तरह हैं?

-क्या नाव के बाहर कोई बचा था?

-नहीं।

-परमेश्वर ने कहा कि नाव के बाहर के सभी लोग मर जाएंगे।

-परमेश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा।

-नाव के बाहर के सभी लोगों के मरने के बाद परमेश्वर ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 8:1-4 और 14-19

1-परन्तु परमेश्वर ने नूह को, और सब पशु, और पशु जो उसके संग जहाज में थे, स्मरण किया, और उस ने पृथ्वी पर आँधी चलाई, और जल घट गया।

2- अब गहिरे सोतों के सोतों और आकाश के झरनों को बन्द कर दिया गया था, और मेंह आकाश से गिरना बन्द हो गया था।

3-पृथ्वी से जल लगातार घट रहा था। डेढ़ सौ दिन के बीतने पर पानी उतर गया,

4 और सातवें महीने के सत्रहवें दिन को सन्दूक अरारात नाम पहाड़ों पर पड़ा।

14-दूसरे महीने के सत्ताईसवें दिन तक पृथ्वी पूरी तरह सूख चुकी थी।

15-तब परमेश्वर ने नूह से कहा,

16 “तू अपनी पत्नी और अपने पुत्रों और उनकी पत्नियों समेत सन्दूक में से निकल आओ।

17 सब प्रकार के जीवधारियों को जो तुम्हारे पास हैं, अर्थात् पक्षी, पशु, और सब प्राणी जो भूमि पर रेंगते हैं, निकाल ले आओ, कि वे पृथ्वी पर बढ़ जाएं, और फूलें, और उस में बढ़ती जाएं।"

18 तब नूह अपने पुत्रों, और अपनी पत्नी और अपने पुत्रों की पत्नियों समेत निकला।

19 सब पशु, और सब प्राणी जो भूमि पर रेंगते हैं, और सब पक्षी, जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, वे सब एक के बाद एक प्रकार के सन्दूक में से निकल आए।

-परमेश्वर ने नाव में नूह और उसके परिवार को याद किया।

-परमेश्वर ने बारिश रोक दी, और पृथ्वी को सुखाने के लिए हवा भेज दी।

-कुछ लोगों का मानना है कि राक्षस बारिश और हवा को नियंत्रित करते हैं।

-वो एक झूठ है।

-केवल परमेश्वर ने बारिश और हवा बनाई।

-केवल परमेश्वर बारिश और हवा के प्रमुख हैं।

-परमेश्वर ने नाव में नूह और उसके परिवार की रक्षा की।

-परमेश्वर ने नाव में सवार सभी जानवरों की रक्षा की।

-क्या नाव के अंदर कोई मर गया?

-नहीं।

-परमेश्वर ने कहा कि वह नूह और उसके परिवार को बचाएगा।

-परमेश्वर हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करेगा।

-नाव छोड़ने के बाद नूह ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 8:20-22

20 तब नूह ने यहोवा के लिथे एक वेदी बनाई, और सब शुद्ध पशुओं और शुद्ध पक्षियों में से कुछ लेकर उस पर होमबलि चढ़ाई।

21-यहोवा ने मनभावने सुगन्ध को सूंघकर अपने मन में कहा, "मनुष्य के कारण मैं फिर कभी भूमि को शाप न दूंगा, चाहे उसके मन का सब कुछ बचपन से ही बुरा हो। और जैसा मैं ने किया है, वैसा फिर कभी मैं सब प्राणियोंको नाश न करूंगा।

22-जब तक पृथ्वी बनी रहे, बीज का समय और कटनी, ठंड और गर्मी, गर्मी और सर्दी, दिन और रात कभी खत्म नहीं होंगे।

-क्योंकि नूह इतना खुश था कि परमेश्वर ने उसे बचाया, नूह ने परमेश्वर को बलिदान दिया।

-परमेश्वर ने नूह के बलिदान को क्यों स्वीकार किया?

-क्योंकि नूह ईश्वर में विश्वास करता था।

-क्योंकि नूह परमेश्वर के मार्ग का अनुसरण करने के लिए अपने ही मार्ग से मुड़ा।

-क्या जानवरों के लहू ने नूह के पाप का भुगतान किया?

-नहीं।

-रक्त ने नूह को सिखाया कि पाप की सजा अनन्त मृत्यु है।

-नूह द्वारा परमेश्वर को बलिदान देने के बाद परमेश्वर ने क्या किया?

आइए पढ़ें उत्पत्ति 9:1-3

1-तब परमेश्वर ने नूह और उसके पुत्रों को यह कहकर आशीष दी, कि फूलो-फलो, और गिनती में बढ़ो, और पृथ्वी में भर जाओ।

2 पृथ्वी के सब पशुओं, और आकाश के सब पक्षियों, और पृथ्वी के सब रेंगनेवाले जन्तुओं, और समुद्र की सब मछलियोंपर तुम्हारा भय और भय छा जाएगा; वे तुम्हारे हाथ में दिए गए हैं।

3-जो कुछ भी रहता है और चलता है वह आपके लिए भोजन होगा। जैसे मैंने तुम्हें हरे पौधे दिए, वैसे ही अब मैं तुम्हें सब कुछ देता हूं।

-परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को आशीर्वाद दिया।

-परमेश्वर ने नूह और सभी लोगों को सभी जानवरों, पक्षियों और मछलियों पर प्रमुख बनाया।

-परमेश्वर ने नूह को एक संकेत भी दिया।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 9:8 और 11-13

8-तब परमेश्वर ने नूह और उसके साथ उसके पुत्रों से कहा:

11- "मैं तेरे साथ अपनी वाचा बान्धता हूं: फिर कभी सारा जीवन जल-प्रलय से नाश न होगा; फिर कभी पृथ्वी को नाश करने के लिये जलप्रलय न आएगा।"

12-परमेश्वर ने कहा, जो वाचा मैं तुम्हारे और तुम्हारे और सब जीवित प्राणियोंके बीच बान्धता हूं, उसका चिन्ह यह है, कि आनेवाली पीढ़ी के लिये यह वाचा है:

13 मैं ने अपना मेघधनुष बादलों पर रखा है, और वह मेरे और पृथ्वी के बीच वाचा का चिन्ह ठहरेगा।"

-परमेश्वर ने नूह और सभी लोगों को क्या संकेत दिया?

-एक इन्द्रधनुष।

-इंद्रधनुष के चिन्ह का क्या अर्थ है?

-इंद्रधनुष का अर्थ है कि परमेश्वर फिर कभी बाढ़ से पृथ्वी को नष्ट नहीं करेंगे।

-क्या परमेश्वर ने बाढ़ से पृथ्वी को फिर से नष्ट नहीं करने का अपना वादा निभाया है?

-हां।

-नूह के समय से, परमेश्वर ने कभी भी पूरी पृथ्वी और उसमें मौजूद हर चीज को बाढ़ से नष्ट नहीं किया है।

आइए पढ़ें उत्पत्ति 9:18-19

18- नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले थे, वे थे शेम, हाम और येपेत।

19- नूह के ये तीन पुत्र थे, और वे लोग जो पृथ्वी पर तित्तर बित्तर हुए थे, उन्हीं में से निकले।

-नूह के पुत्र कौन थे जो पृथ्वी पर सभी लोगों के पूर्वज हैं?

-शेम, हाम और येपेत।